International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialsciencejournal.in
Volume 3; Issue 8; August 2017; Page No. 56-57

बुन्देलखण्ड़ भौगोलिक प्रदेश में कृषि : दलहन प्रतिरूप : एक अध्ययन

[1] लक्ष्मीकान्त मिश्रा, [2] रमाकान्त द्विवेदी

[1] विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र, सीताराम समर्पण महाविद्यालय, नरैनी, बॉदा, उत्तर प्रदेश, भारत।
[2] सहायक प्राध्यापक भूगोल, सीताराम समर्पण महाविद्यालय, नरैनी, बॉदा, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
जैव जगत में भोजन श्रृंखला जीवन का आधार है, इसके अभाव में जीवन जीवन सम्भव नहीं है। उसी क्रम में मानव जीवन में भी भोजन एक महत्वपूर्ण आधार जीवन का है। मानव अपनी उदर पूर्ति विभिन्न खाद्यान्नों से करता है, उसको पौष्टिक आहार खाद्यान्नों से प्राप्त होता है। उन पौष्टिक आहारों में एक दलहन है, जो लग्युमिनोसी परिवार की सदस्य है। यह विभिन्न फसल–चक्रों में उगाई जाती है। यह आहार 17–30% मानव शरीर को प्रोटीन प्रदान करता है, जो कि अन्य खाद्यान्नों में पायी जाने वाली प्रोटीन से 2–3 गुना अधिक पायी जाती है। दलहन में प्रोटीन के अतिरिक्त रेशे, कैल्शियम, फास्फोरस, लौह तत्व तथा विटामिन पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं। दलहन के अन्तर्गत चना, अरहर, मूँग, उर्द़, मटर, मसूर आदि प्रमुख हैं। इसका उत्पादन, उपयोग आदि पर अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

मूल शब्द : पौष्टिक आहारों, दलहन प्रतिरूप, बुन्देलखण्ड़ ।

प्रस्तावना
अथर्वेद के पृथ्वी सूक्त में लिखा है कि हे धरती मॉ, जो कुछ मैं तुझसे लूगॉ, वह अतना ही होगा, जिसे तू पुनः पैदा कर सके। मैं तेरे मर्म स्थल पर या तेरी जीवनशक्ति पर कभी आघात नहीं करूॅगा। उपरोक्त कथन कृषि व कृषक को परिलक्षित करता है। कृषि पृथ्वी से उत्पादित वस्तु है, जिसका उपभोग मानव समाज बड़ी सरलता व सहजता से करता है।

''संसार के निर्धन देशों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण वर्ग–संघर्ष न श्रम और न पूंजी के बीच है और न ही विदेशी व राष्ट्रीय हितों के बीच। सबसे महत्वपूर्ण वर्ग–संघर्ष ग्रामीण व शहरी वर्गों के बीच है।'' माइकल लिप्टन1

भारतीय अर्थव्यवस्था, संसार की संसारिक अर्थव्यवस्थों से पुरानी व्यवसायिक आर्थिक कड़ी है। उस पुरानी अर्थव्यवस्था में कृषक वर्ग की स्थिति इतनी खराब नहीं थी जितनी वर्तमान में है। वर्तमान बढ़ती जनसंख्या, बढ़ता नगरीकरण का स्वरूप, बढ़ते औद्योगिक नगर और बढ़ती भौतिकतावदी जीवन शैली ने भारतीय कृषि को पंगु कर दिया है, जिससे कृषि जोतों में कमी, कंकरीट के जंगलों का विस्तार ने कृषि योग्य मौसम को भी प्रभवित किया है। जो कृषि पर समस्या का रूप धारण कर रही है। प्रस्तुत अध्ययन भारत के ह्रदय स्थल बुन्देलखण्ड़ में कृषि समस्या एक सर्वोपरि समस्या के रूप में देखी जा सकती है।

अध्ययन क्षेत्र
बुन्देलखण्ड़ की कृषि को भौगोलिक दशाओं ने प्रभावित किया है। बुन्देलखण्ड़ के उच्चावच व मृदा ने कृषि कार्य में बाधा पहुॅचाई है, यहॉ कि मृदा में संयोजन क्षमता का अभाव के साथ साथ सम्पूर्ण क्षेत्र छोटे–छोटे पठारी भागों में छिथरा हुआ है जहॉ छोटी–बड़ी नदियों का भी आभाव है, जो कृषि सिंचाई वर्षा पर आधारित हो जाती है। यहॉ बरसाती नालों की संख्या अधिक होने के कारण दतिया, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना और झॉसी, ललितपुर, जालौन, बॉदा, चित्रकूट, हमीरपुर तथा महोबा की लाल हल्की कृषि योग्य मृदा को प्रभावित किया है। यहॉ ग्रीष्म ऋतु में घास और वनस्पति आच्छादन घट जाता है जिस कारण शुष्क ग्रीष्म के बाद वर्षा ऋतु में जल वृष्टि सीधे मृदा पर होती है जिससे भूमि की उपरी उर्वर मृदा बह जाती है, जो कृषि उत्पादकता में कमी आ जाती है। यहॉ कृतिम सिंचाई के साधनों का अभाव जो कृषि उत्पादकता को बढ़ाने में सहायक होती है। बुन्देलखण्ड़ औद्योगिक व नगरीकरण का विकास अल्प होने के कारण यहॉ के लोगों का प्रमुख व्यवसाय अभी भी कृषि ही बनी हुई है। यहॉ की कुल जनसंख्या का 80 प्रतिशत लोग कृषि कार्य पर लगे हुए हैं, जिस कारण यहॉ देश के सबसे गरीब लोग यहीं बसते हैं, जिस कारण यहॉ आपराधिक गतिविधियॉ भी अधिक देखने को मिलती हैं। उपरोक्त समस्याऐं बुन्देलखण्ड़ को बयां करती है।

कृषि प्रतिरूप अथर्वेद के पृथ्वी सूक्त में लिखा है कि हे धरती मॉ, जो कुछ मैं तुझसे लूगॉ, वह उतना ही होगा, जिसे तू पुनः पैदा कर सके। मैं तेरे मर्म स्थल पर या तेरी जीवनशक्ति पर कभी आघात नहीं करूॅगा। उपरोक्त कथन कृषि व कृषक को परिलक्षित करता है। कृषि पृथ्वी से उत्पादित वस्तु है, जिसका उपभोग मानव समाज बड़ी सरलता व सहजता से करता है। भारतीय अर्थव्यवस्था, संसार की संसारिक अर्थव्यवस्थाओं से पुरानी व्यवसायिक आर्थिक कड़ी है। उस पुरानी अर्थव्यवस्था में कृषक वर्ग की स्थिति इतनी खराब नहीं थी जितनी वर्तमान में है। वर्तमान बढ़ती जनसंख्या, बढ़ता नगरीकरण का स्वरूप, बढ़ते औद्योगिक नगर और बढ़ती भौतिकतावदी जीवन शैली ने भारतीय कृषि को पंगु कर दिया है, जिससे कृषि जोतों में कमी, कंकरीट के जंगलों का विस्तार ने कृषि योग्य मौसम को भी प्रभवित किया है। जो कृषि पर समस्या का रूप धारण कर रही है। प्रस्तुत अध्ययन भारत के ह्रदय स्थल बुन्देलखण्ड़ में कृषि समस्या एक सर्वोपरि समस्या के रूप में देखी जा सकती है। निजी क्षेत्र में कृषि भारत का सबसे बड़ा व्यवसाय (Occupation) है। भारत गावों का देश तथा कृषि अर्थतन्त्र है। भारत में दस करोड़ से अधिक लोग कृषि कार्य पर लगे हैं, जो भारतीय अर्थव्यवस्था का मूल आधार भी है। देश की कुल आय का 17 प्रतिशत योग दान कृषि का ही है। जिसमें कृषि श्रमिक या प्राथमिक श्रमिक वर्ग का 52 प्रतिशत से अधिक लोग कृषि कार्य पर लगे हैं। 1960 के दशक में भारत से लगभग 8 से 10 मिलियन टन आनाज आयात किया जाता था, परन्तु कृषि नवाचारों के माध्यम से नवीन बीज, कृषि यन्त्रों की सहायता से देश आज आत्मनिर्भर बन गया है। वर्ष 1950 की तुलना में 3ण्5 गुणा

खाद्यान्न उत्पादनों, 1.6 गुणा सब्जियों, पशु पालन एवं दूध उत्पादन में 1.8 गुणा की वृद्धि हुई है। उपरोक्त दशाऐं बुन्देलखण्ड़ प्रदेश पर भी लागू होती हैं लेकिन बुन्देलखण्ड़ अत्यन्त पिछड़ा क्षेत्र होने के कारण कृषि के नवाचारों का अभाव है, बुन्देलखण्ड़ अभिशाप गरीबी व अशिक्षा होन के करण यहॉ जनसंख्या वृद्धि एवं बेरोजगारी पैर पसार रही है, जो एक समस्या बनी हुई है। प्रस्तुत शोध पत्र बुन्देलखण्ड़ भौगोलिक प्रदेश में कृषि विकास एवं कृषि समस्याओं पर प्रकाश डालना है।

दलहन मृदा सुधार में सहायक दलहन का उत्पदन मृदा और वर्षा, तापमान पर निर्भर करता है। वैसे तो फसल चक्र के अनुसार रबी सीजन में चना, मसूर प्रमुख हैं, खरीफ सीजन में अरहर, मूँग और उर्द हैं इसके अलावा मूँग और उर्द को बसंत सीजन में भी उगाया जाता है। दलहन उत्पादन से मृदा स्वस्थ्य तथा पोषण युक्त हो जाती है, जिससे मृदा की भौतिक, रासायनिक तथा जैविक सुधार होता है। जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति में वृद्धि होती है। जिस कारण अन्य खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि होती है। वर्तमान समय में देश दलहन का कुल क्षेत्रफल 233.5 लाख हेक्टेयर है तथा कुल उत्पादन लगभग 146 लाख टन है।

सारणी संख्या 1: बुन्देलखण्ड़ में दलहन क्षेत्रफल एंव उत्पादन प्रतिरूप

क्रम संख्या	दलहन	बोया गया क्षेत्र लाख हेक्टेयर में	उत्पादन लाख टन में
1	अरहर	39.9	27.8
2	मूँग	34.4	14.0
3	उर्द	31.0	14.0
4	चना	89.6	77.0
5	मटर	7.13	6.56
6	मसूर	16.0	9.40

स्रोत– भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान कानपुर

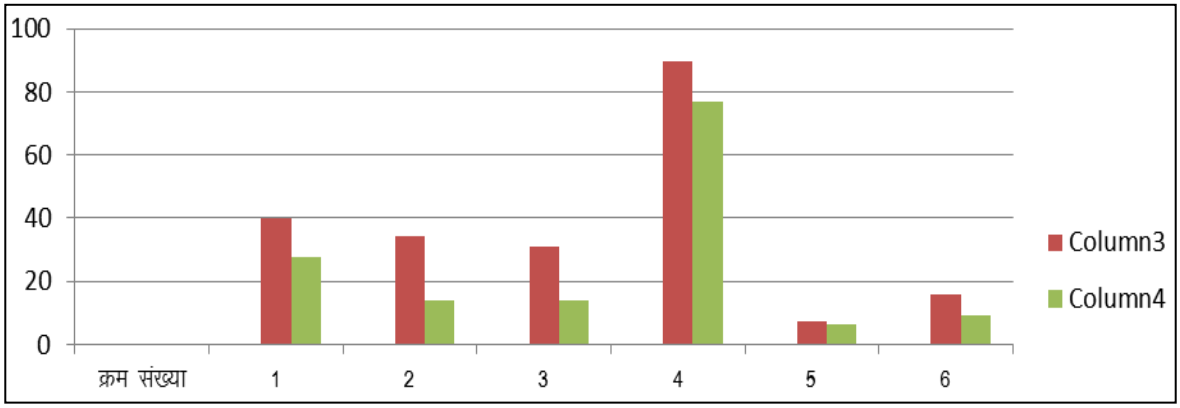

ग्राफ संख्या 1

उपरोक्त सारणी और ग्राफ से पता चलता है कि भारत में दलहन का क्षेत्र अत्यन्त कम है। भारत में मुख्यतः छः प्रकार की दलहनों का उत्पादन अधिक किया जाता है, जो क्रमशः चना, अरहर, मूँग, उर्द, मसूर तथा सबस के क्षेत्र मटर का है। इसी प्रकार दलहन के उत्पादन पर नजर डाले तो पता चलता है कि सबसे अधिक उत्पादन क्रमशः चना, अरहर, मूँग, उर्द, मसूर और मटर का है। इस प्रकार से देश में क्षेत्रफल के अनुसार उत्पादन देखा जा सकता है।

निष्कर्ष भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था में दलहन एक प्रमुख फसल हैं। यह मानव स्वास्थ्य का प्रतीक भी हैं इसके अभाव में कुपोषण जैसी बिमारियॉ होने लगती हैं जिससे मानव स्थास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। उपरोक्त अध्ययन से पता चलता है कि देश में दलहन का क्षेत्र अत्यन्त कम है। इसके विस्तार की योजनाऍ बननी चाहिए। इसके उत्पादन वृद्धि से मानव स्वास्थ्य एवं आर्थिक वृद्धि सम्भव है, जिससे मानव जीवन खुशहाल हो सकता है। प्रस्तुत शोध पत्र अध्ययन से पता चलता है कि बुन्देलखण्ड़ की कृषि को प्रकृति ने निर्धारित किया है, जिसमें अल्प उत्पादकता प्रमुख है, इसके बाद यहॉ की शासन व्यवस्था की अक्रियाशीलता, कार्यप्रणाली, अशिक्षा, आर्थिक तंगी व कृषि नवाचारों के आभाव ने बुन्देलखण्ड़ की कृषि विकास सम्बन्धी समस्याओं को जन्म दिया है।

सन्दर्भ सूची

1. शुक्ला पी.एन. 1983 कखावतू गॉव का भू–अर्थिकी सर्वेक्षण
2. सिंह चौहान रणवीर 1992 ''हमीरपुर तहसील उत्तर प्रदेश में भूमि उपयोग, पोषण स्तर एवं मानव स्वास्थ्य'' अप्रकाशित शोध प्रबन्ध बुन्देलखण्ड़ विश्वविद्यालय, झॉसी उत्तर प्रदेश
3. द्विवेदी रमाकान्त 2007 ''नरैनी विकास खण्ड़ में भूमि उपयोग, पोषण स्तर एवं मानव स्वास्थ्य ग्राम ऐंचवारा के विशिष्ट सन्दर्भ में'' अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध झॉसी उत्तर प्रदेश
4. हूसैन माजिद पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी
5. मिश्र एवं पुरी भारतीय अर्थव्यवस्था
6. अवस्थी मोहन नरेन्द्र पर्यावरणीय अध्ययन
7. भारतीय दलहन अनुसंधान पत्रिका, कानपुर
8. Agnihotri R.C. 1995 Geomedical Environment and Helth Care.
9. Gopalan c. 1985 Nutritive Value of Indian Food, National Instiute of Nutrition, I.C.M.R. Hyderabad